Chapter सत्रह

पुरूरवा के पुत्रों की वंशावली

पुरूरवा के ज्येष्ठ पुत्र आयु से पाँच पुत्र हुए। इस अध्याय में क्षत्रवृद्ध से लेकर चार पुत्रों के वंशों का वर्णन है।

पुरूरवा के पुत्र आयु से पाँच पुत्र हुए—नहुष, क्षत्रवृद्ध, रजी, राभ तथा अनेना। क्षत्रवृद्ध का पुत्र सुहोत्र था, जिसके तीन पुत्र हुए—काश्य, कुश तथा गृत्समद। गृत्समद का पुत्र शुनक था और उसका पुत्र था शौनक। काश्य का पुत्र काशि था। काशि के पुत्र-पौत्रों के नाम थे राष्ट्र, दीर्घतम तथा धन्वन्तरि। धन्वन्तरि आयुर्वेद विज्ञान का सूत्रपात करने वाला था और भगवान् वासुदेव का शक्त्यावेश अवतार था। धन्वन्तरि के वंशजों में केतुमान, भीमरथ, दिवोदास तथा द्युमान हुए। द्युमान के अन्य नाम प्रतर्दन, शत्रुजित, वत्स, ऋतध्वज तथा कुवलयाश्व थे। द्युमान का पुत्र अलर्क था जिसने अनेकानेक वर्षों तक राज्य किया। अलर्क के ही वंश में सन्तति, सुनीथ, निकेतन, धर्मकेतु, सत्यकेतु, धृष्टकेतु, सुकुमार, वीतिहोत्र, भर्ग तथा भार्गभूमि हुए। ये सभी क्षत्रवृद्ध के वंशज काशी के कुल से सम्बद्ध थे।

राभ का पुत्र रभस हुआ जिसके पुत्र का नाम गम्भीर था। गम्भीर का पुत्र अक्रिय हुआ और उसका पुत्र ब्रह्मवित हुआ। अनेना का पुत्र शुद्ध था और उसका पुत्र शुचि था। शुचि के पुत्र का नाम चित्रकृत था जिसका पुत्र शान्तरज हुआ। रजी के पाँच सौ पुत्र हुए जो एक से एक बढ़कर महाबली थे। रजी स्वयं अत्यन्त बलवान था जिसे इन्द्र ने स्वर्ग का राज्य सौंपा था। रजी की मृत्यु के बाद जब उसके पुत्रों ने इन्द्र को साम्राज्य वापस देने से मना कर दिया, बृहस्पति की योजना से वे मूर्ख बन गये उन्हें मूर्ख बना दिया और तब इन्द्र ने उन्हें पराजित किया।

क्षत्रवृद्ध के पौत्र कुश से प्रति नाम का पुत्र हुआ जिससे सञ्जय, फिर उससे जय, जय से कृत और कृत से हर्यबल हुआ। हर्यबल के पुत्र का नाम सहदेव था, उसके पुत्र का नाम हीन, हीन के पुत्र का नाम जयसेन, जयसेन के पुत्र का नाम संकृति तथा संकृति के पुत्र का नाम जय था।

श्रीबादरायणिरुवाच

य: पुरूरवस: पुत्र आयुस्तस्याभवन्सुता: ।
नहुष: क्षत्रवृद्धश्च रजी राभश्च वीर्यवान् ॥ १ ॥
अनेना इति राजेन्द्र शृणु क्षत्रवृधोऽन्वयम् ।
क्षत्रवृद्धसुतस्यासन्सुहोत्रस्यात्मजास्त्रय: ॥ २ ॥
काश्य: कुशो गृत्समद इति गृत्समदादभूत् ।
शुनक: शौनको यस्य बह्वृचप्रवरो मुनि: ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

श्री-बादरायणि: उवाच—श्री शुकदेव गोस्वामी ने कहा; य:—जो; पुरूरवस:—पुरूरवा का; पुत्र:—पुत्र; आयु:—आयु; तस्य—उसका; अभवन्—हुए; सुता:—पुत्र; नहुष:—नहुष; क्षत्रवृद्ध: च—तथा क्षत्रवृद्ध; रजी—रजी; राभ:—राभ; च—भी; वीर्यवान्—अत्यन्त शक्तिशाली; अनेना:—अनेना; इति—इस प्रकार; राज-इन्द्र—हे महाराज परीक्षित; शृणु—सुनो; क्षत्रवृध:—क्षत्रवृध का; अन्वयम्—वंश; क्षत्रवृद्ध—क्षत्रवृद्ध के; सुतस्य—पुत्र के; आसन्—थे; सुहोत्रस्य—सुहोत्र के; आत्मजा:—पुत्र; त्रय:—तीन; काश्य:—काश्य; कुश:—कुश; गृत्समद:—गृत्समद; इति—इस प्रकार; गृत्समदात्—गृत्समद से; अभूत्—हुए; शुनक:—शुनक; शौनक:—शौनक; यस्य—जिसका (शुनक का); बहु-ऋच-प्रवर:—ऋग्वेद में सर्वाधिक पटु; मुनि:—मुनि।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : पुरूरवा से आयु नामक पुत्र हुआ जिससे नहुष, क्षत्रवृद्ध, रजी, राभ तथा अनेना नाम के अत्यन्त शक्तिशाली पुत्र उत्पन्न हुए। हे महाराज परीक्षित, अब क्षत्रवृद्ध के वंश के विषय में सुनो। क्षत्रवृद्ध का पुत्र सुहोत्र था जिसके तीन पुत्र हुए—काश्य, कुश तथा गृत्समद। गृत्समद से शुनक हुआ और शुनक से शौनक मुनि उत्पन्न हुए जो ऋग्वेद में सर्वाधिक पटु थे।

काश्यस्य काशिस्तत्पुत्रो राष्ट्रो दीर्घतम:पिता ।
धन्वन्तरिर्दीर्घतमस आयुर्वेदप्रवर्तक: ।
यज्ञभुग्वासुदेवांश: स्मृतमात्रार्तिनाशन: ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

काश्यस्य—काश्य का; काशि:—काशि; तत्-पुत्र:—उसका पुत्र; राष्ट्र:—राष्ट्र; दीर्घतम:-पिता—जो दीर्घतम का पिता बना; धन्वन्तरि:—धन्वन्तरि; दीर्घतमस:—दीर्घतम से; आयु:-वेद-प्रवर्तक:—आयुर्वेद के जनक; यज्ञ-भुक्—यज्ञफलों का भोक्ता; वासुदेव-अंश:—भगवान् वासुदेव का अवतार; स्मृत-मात्र—नाम लेने से ही; आर्ति-नाशन:—सारे रोग विनष्ट हो जाते हैं।

काश्य का पुत्र काशि था और उसका पुत्र राष्ट्र हुआ जो दीर्घतम का पिता था। दीर्घतम के धन्वन्तरि नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जो आयुर्वेद का जनक तथा समस्त यज्ञफलों के भोक्ता भगवान् वासुदेव का अवतार था। जो धन्वन्तरि का नाम याद करता है उसके सारे रोग दूर हो सकते हैं।

तत्पुत्र: केतुमानस्य जज्ञे भीमरथस्तत: ।
दिवोदासो द्युमांस्तस्मात्प्रतर्दन इति स्मृत: ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

तत्-पुत्रः—उसका (धन्वन्तरि का) पुत्र; केतुमान्—केतुमान; अस्य—उसका; जज्ञे—जन्म लिया; भीमरथः—भीमरथ नाम के पुत्र ने; ततः—उससे; दिवोदासः—दिवोदास; द्युमान्—द्युमान; तस्मात्—उससे; प्रतर्दनः—प्रतर्दन; इति—इस प्रकार; स्मृतः—ज्ञात।

धन्वन्तरि का पुत्र केतुमान हुआ और उसका पुत्र भीमरथ था। भीमरथ का पुत्र दिवोदास था और उसका पुत्र द्युमान हुआ जो प्रतर्दन भी कहलाता था।

स एव शत्रुजिद्वत्स ऋतध्वज इतीरितः ।
तथा कुवलयाश्वेति प्रोक्तोऽलर्कादयस्ततः ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

सः—वह, द्युमान; एव—निस्सन्देह; शत्रुजित्—शत्रुजित; वत्सः—वत्स; ऋतध्वजः—ऋतध्वज; इति—इस तरह; ईरितः—विख्यात; तथा—और; कुवलयाश्व—कुवलयाश्व; इति—इस प्रकार; प्रोक्तः—विख्यात; अलर्क-आदयः—अलर्क तथा अन्य पुत्र; ततः—उससे।

द्युमान शत्रुजित, वत्स, ऋतध्वज तथा कुवलयाश्व नामों से भी विख्यात था। उससे अलर्क तथा अन्य पुत्र उत्पन्न हुए।

षष्टिं वर्षसहस्राणि षष्टिं वर्षशतानि च ।
नालर्कादपरो राजन्बुभुजे मेदिनीं युवा ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

षष्टिम्—साठ; वर्ष-सहस्राणि—हजार वर्ष; षष्टिम्—साठ; वर्ष-शतानि—सैकड़ों वर्ष; च—भी; न—नहीं; अलर्कात्—अलर्क के अलावा; अपरः—कोई दूसरा; राजन्—हे राजा परीक्षित; बुभुजे—भोग किया; मेदिनीम्—पृथ्वी का; युवा—युवक पुरुष की भाँति।

हे राजा परीक्षित, द्युमान के पुत्र अलर्क ने पृथ्वी पर छियाछठ हजार वर्षों से भी अधिक समय तक राज्य किया। इस पृथ्वी पर उनके अतिरिक्त किसी अन्य ने युवक के रूप में इतने दीर्घकाल तक राज्य नहीं भोगा।

अलर्कात्सन्ततिस्तस्मात्सुनीथोऽथ निकेतनः ।
धर्मकेतुः सुतस्तस्मात्सत्यकेतुरजायत ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

अलर्कात्—अलर्क से; सन्ततिः—सन्तति; तस्मात्—उससे; सुनीथः—सुनीथ; अथ—उससे; निकेतनः—निकेतन; धर्मकेतुः—धर्मकेतु; सुतः—पुत्र; तस्मात्—तथा धर्मकेतु से; सत्यकेतुः—सत्यकेतु; अजायत—उत्पन्न हुआ।

अलर्क से सन्तति नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका पुत्र सुनीथ हुआ। सुनीथ का पुत्र निकेतन था। निकेतन का पुत्र धर्मकेतु हुआ और धर्मकेतु का पुत्र सत्यकेतु था।

धृष्टकेतुस्ततस्तस्मात्सुकुमारः क्षितीश्वरः ।
वीतिहोत्रोऽस्य भर्गोऽतो भार्गभूमिरभून्नृप ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

धृष्टकेतुः—धृष्टकेतु; ततः—तत्पश्चात्; तस्मात्—धृष्टकेतु से; सुकुमारः—सुकुमार; क्षिति-ईश्वरः—सारे संसार का सम्राट; वीतिहोत्रः—वीतिहोत्र; अस्य—उसका पुत्र; भर्गः—भर्ग; अतः—उससे; भार्गभूमिः—भार्गभूमि; अभूत्—उत्पन्न हुआ; नृप—हे राजा।

हे राजा परीक्षित, सत्यकेतु का पुत्र धृष्टकेतु हुआ और धृष्टकेतु का पुत्र सुकुमार हुआ जो पूरे विश्व का सम्राट था। सुकुमार का पुत्र वीतिहोत्र हुआ, जिसका पुत्र भर्ग था और भर्ग का पुत्र भार्गभूमि हुआ।

इतीमे काशयो भूपाः क्षत्रवृद्धान्वयायिनः ।
राभस्य रभसः पुत्रो गम्भीरश्चाक्रियस्ततः ॥ १० ॥

शब्दार्थ

इति—इस प्रकार; इमे—ये सभी; काशयः—काशि के वंश में उत्पन्न; भूपाः—राजा; क्षत्रवृद्ध-अन्वय-आयिनः—क्षत्रवृद्ध के वंश के भीतर भी; राभस्य—राभ का; रभसः—रभस; पुत्रः—पुत्र; गम्भीरः—गम्भीर; च—भी; अक्रियः—अक्रिय; ततः—उससे।

हे महाराज परीक्षित, ये सारे राजा काशि के वंशज थे और इन्हें क्षत्रवृद्ध के उत्तराधिकारी भी कहा जा सकता है। राभ का पुत्र रभस हुआ, रभस का पुत्र गम्भीर और गम्भीर का पुत्र अक्रिय कहलाया।

तद्गोत्रं ब्रह्मविज्जज्ञे शृणु वंशमनेनसः ।
शुद्धस्ततः शुचिस्तस्माच्चित्रकृद्धर्मसारथिः ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

तत्-गोत्रम्—अक्रिय का उत्तराधिकारी; ब्रह्मवित्—ब्रह्मवित ने; जज्ञे—जन्म लिया; शृणु—सुनो; वंशम्—वंश वालों को; अनेनसः—अनेना का; शुद्धः—शुद्ध; ततः—उससे; शुचिः—शुचि; तस्मात्—उससे; चित्रकृत्—चित्रकृत; धर्म-सारथिः—धर्मसारथि।

हे राजा, अक्रिय का पुत्र ब्रह्मवित कहलाया। अब अनेना के वंशजों के विषय में सुनो। अनेना का पुत्र शुद्ध था और उसका पुत्र शुचि था। शुचि का पुत्र धर्मसारथि था जो चित्रकृत भी कहलाता था।

ततः शान्तरजो जज्ञे कृतकृत्यः स आत्मवान् ।
रजेः पञ्चशतान्यासन्पुत्राणाममितौजसाम् ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

ततः—चित्रकृत से; शान्तरजः—शान्तरज; जज्ञे—उत्पन्न हुआ; कृत-कृत्यः—सारे अनुष्ठान सम्पन्न किये; सः—उसने; आत्मवान्—स्वरूपसिद्ध; रजेः—रजी के; पञ्च-शतानि—पाँच सौ; आसन्—थे; पुत्राणाम्—पुत्रों का; अमित-ओजसाम्—अत्यन्त शक्तिशाली।

चित्रकृत के शान्तरज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जो स्वरूपसिद्ध व्यक्ति था जिसने समस्त वैदिक कर्मकाण्ड सम्पन्न किये। फलतः उसने कोई सन्तान उत्पन्न नहीं की। रजी के पाँच सौ पुत्र हुए जो सारे के सारे अत्यन्त शक्तिशाली थे।

देवैरभ्यर्थितो दैत्यान्हत्वेन्द्रायाददाद्दिवम् ।
इन्द्रस्तस्मै पुनर्दत्त्वा गृहीत्वा चरणौ रजेः ।
आत्मानमर्पयामास प्रह्लादाद्यरिशङ्कितः ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

देवैः—देवताओं द्वारा; अभ्यर्थितः—प्रार्थना किये जाने पर; दैत्यान्—दैत्यों को; हत्वा—मारकर; इन्द्राय—स्वर्ग के राजा इन्द्र को; अददात्—प्रदान किया; दिवम्—स्वर्ग का राज्य; इन्द्रः—इन्द्र ने; तस्मै—उसको, रजी को; पुनः—फिर से; दत्त्वा—लौटाते हुए; गृहीत्वा—ग्रहण करके; चरणौ—दोनों पाँव; रजेः—रजी के; आत्मानम्—स्वयं को; अर्पयाम् आस—समर्पित कर दिया; प्रह्लाद-आदि—प्रह्लाद इत्यादि; अरि-शङ्कितः—ऐसे शत्रुओं से डर कर।

देवताओं की प्रार्थना पर रजी ने दैत्यों का वध किया और स्वर्ग का राज्य इन्द्रदेव को लौटा दिया। किन्तु इन्द्र ने प्रह्लाद जैसे दैत्यों के डर से स्वर्ग का राज्य रजी को लौटा दिया और स्वयं उसके चरणकमलों की शरण ग्रहण कर ली।

पितर्युपरते पुत्रा याचमानाय नो ददुः ।
त्रिविष्टपं महेन्द्राय यज्ञभागान्समाददुः ॥ १४ ॥

शब्दार्थ

पितरि—जब उनका पिता; उपरते—दिवंगत हो गया; पुत्राः—लड़कों ने; याचमानाय—माँगने पर; नो—नहीं; ददुः—लौटाया; त्रिविष्टपम्—स्वर्ग का राज्य; महेन्द्राय—महेन्द्र को; यज्ञ-भागान्—यज्ञ के भाग; समाददुः—दिया।

रजी की मृत्यु के बाद इन्द्र ने रजी के पुत्रों से स्वर्ग का राज्य लौटाने के लिए याचना की। किन्तु उन्होंने नहीं लौटाया, यद्यपि वे इन्द्र का यज्ञ-भाग लौटाने के लिए राजी हो गये।

तात्पर्य : रजी ने स्वर्ग का राज्य जीता था; अतएव जब इन्द्र ने रजी के पुत्रों से राज्य लौटाने के लिए याचना की तो उन्होंने मना कर दिया। चूँकि उन्होंने स्वर्ग का राज्य इन्द्र से नहीं लिया था, अपितु इसे अपने पिता से उत्तराधिकार में प्राप्त किया था अतएव वे इसे पैतृक सम्पत्ति मानते थे। तो फिर वे इसे देवताओं को क्यों लौटाते ?

गुरुणा हूयमानेऽग्नौ बलभित्तनयान्रजेः ।
अवधीद्भ्रंशितान्मार्गान्न कश्चिदवशेषितः ॥ १५॥

शब्दार्थ

गुरुणा—गुरु (बृहस्पति) द्वारा; हूयमाने अग्नौ—अग्नि में आहुति डालते समय; बलभित्—इन्द्र ने; तनयान्—पुत्रों को; रजेः—रजी के; अवधीत्—मार डाला; भ्रंशितान्—गिरे हुए; मार्गात्—नैतिक सिद्धान्तों से; न—नहीं; कश्चित्—कोई; अवशेषितः—जीवित रहा।

तत्पश्चात् देवताओं के गुरु बृहस्पति ने अग्नि में आहुति डाली जिससे रजी के पुत्र नैतिक सिद्धान्तों से नीचे गिर सकें। जब वे गिर गये तो इन्द्र ने उनके पतन के कारण उन्हें सरलता से मार डाला। उनमें से एक भी नहीं बच पाया।

कुशात्प्रतिः क्षात्रवृद्धात्सञ्जयस्तत्सुतो जयः ।
ततः कृतः कृतस्यापि जज्ञे हर्यबलो नृपः ॥ १६॥

शब्दार्थ

कुशात्—कुश से; प्रतिः—प्रति नामक पुत्र; क्षात्रवृद्धात्—क्षत्रवृद्ध का पौत्र; सञ्जयः—सञ्जय; तत्-सुतः—उसका पुत्र; जयः—जय; ततः—उससे; कृतः—कृत; कृतस्य—कृत का; अपि—भी; जज्ञे—उत्पन्न हुआ; हर्यबलः—हर्यबल; नृपः—राजा।

क्षत्रवृद्ध के पौत्र कुश से प्रति नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। प्रति का पुत्र सञ्जय, सञ्जय का पुत्र जय, जय का पुत्र कृत और कृत का पुत्र राजा हर्यबल हुआ।

सहदेवस्ततो हीनो जयसेनस्तु तत्सुतः ।
सङ्कृतिस्तस्य च जयः क्षत्रधर्मा महारथः ।
क्षत्रवृद्धान्वया भूपा इमे शृण्वथ नाहुषान् ॥ १७॥

शब्दार्थ

सहदेवः—सहदेव; ततः—उससे; हीनः—हीन नामक; जयसेनः—जयसेन; तु—भी; तत्-सुतः—हीन का पुत्र; सङ्कृतिः—संकृति; तस्य—उसका; च—भी; जयः—जय; क्षत्र-धर्मा—क्षत्रिय के कर्तव्यों में पटु; महा-रथः—अत्यन्त शक्तिशाली योद्धा; क्षत्रवृद्ध-अन्वयाः—क्षत्रवृद्ध के वंश में; भूपाः—राजा; इमे—ये सारे; शृणु—सुनो; अथ—अब; नाहुषान्—नहुष के उत्तराधिकारियों के बारे में।

हर्यबल का पुत्र सहदेव, सहदेव का पुत्र हीन, हीन का पुत्र जयसेन और जयसेन का पुत्र संकृति हुआ। संकृति का पुत्र जय अत्यन्त शक्तिशाली एवं निपुण योद्धा था। ये सभी राजा क्षत्रवृद्ध वंश के सदस्य थे। अब मैं नहुष के वंश का वर्णन करूँगा।

इस प्रकार *श्रीमद्भागवत* के नवम स्कन्ध के अन्तर्गत ''पुरूरवा के पुत्रों की वंशावली'' नामक सत्रहवें अध्याय के भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुए।